Periodic Test – 1
Class – 7
Sanskrit

प्रथमः पाठः – अस्माकं देशः

पाठ का अनुवाद

(1) अस्माकं देशः ---------- चरणौ क्षालयति ।

अनुवाद – हमारा देश भारत हमारा गौरव है। इसका प्राचीन (पुराना) नाम आर्यवर्त था। विश्व की प्राचीन संस्कृति भारत में ही जीवित है। भारत की उत्तरदिशा में हिमालय मुकुट की तरह शोभित है। दक्षिणदिशा में सागर का नीला जल इसके पैर धोता है।

(2) भारते ग्रीष्मः ---------- प्रसन्नाः भवन्ति ।

अनुवाद – भारत में ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर तथा वसन्त ये छः ऋतुएँ होती हैं। ये भारत के प्राकृतिक सौंदर्य को बढ़ाती हैं। भारत की हरीभरी फसलें तथा नया-नया मनोरंजक रूप लोगों के मन को आकर्षित करता है। विदेशी भी भारतभूमि की सुन्दरता को देखकर प्रसन्न होते हैं।

(3) अस्माकं देशः ---------- राष्ट्रगानं गायामः ।

अनुवाद – हमारा देश अनेक गुणों से सम्पन्न है। यह ज्ञानभूमि, पुण्यभूमि, धर्मभूमि तथा कर्मभूमि इस नाम से भी प्रसिद्ध है। यहीं ज्ञान का प्रथम उदय हुआ था। यहाँ बहुत से देवपुरुष, चिकित्सक, गणितज्ञ, दार्शनिक, वैज्ञानिक, कवि तथा नाटककारों ने जन्म लिया। जबकि यहाँ अलग-अलग लोग, भाषाएँ, वेश, भूषा, धर्म और सम्प्रदाय हैं, फिर भी लोगों में अनेकता में एकता की शीतल स्नेह धारा बहती है। हम सभी भारतीय एक राष्ट्रध्वज को नमस्कार करते हैं तथा एक ही राष्ट्रगान गाते हैं।

(4) इदं ---------- जीवनम् ।

(5) यह भारतराष्ट्र वन्दनीय है। इसका विकास और प्रगति हमारा महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है। धन्य है हमारा भारत देश, इसलिए हम भारतीय भी धन्य हैं। हमारे भारतीयों की सत्य में ही निष्ठा है। हम नित्य ही भारत को ही याद करते हैं। भारत ही हमारा जीवन है।

(ङ) एक पद में उत्तर –

(क) हिमालयः (ग) भारतवसुधायाः (ङ) भारतजनानां

(ख) सागरस्य (घ) शीतला

(5) पूर्णवाक्य में उत्तर –

(क) भारतस्य प्राचीनं नाम आर्यवर्तः आसीत् ।
(ख) षट् ऋतवः भारतस्य प्राकृतिकं सौंदर्यं वर्धयन्ति ।
(ग) अस्माकं देशः नानापर्वैः प्रसिद्धः ।
(घ) अत्र बहवः देवपुरुषाः, गणितज्ञाः, कवयः चादि अजायन्त ।
(ङ) वयं सर्वे भारतीयाः एकं राष्ट्रध्वजं नमामः ।

द्वितीयः पाठः – मूर्खः काकः

पाठ का अनुवाद

(1) एकस्मिन वने ———————— अलभत ।
अनुवाद – एक जंगल में एक कौआ रहता था। वह बहुत ही भूखा था। वह भोजन के लिए इधर-उधर घूम रहा था। तब उसने एक रोटी प्राप्त की ।

(2) सः काकः ———————— अजायत ।
अनुवाद – वह कौआ रोटी को अपनी चोंच में दबाकर पेड़ की शाखा पर बैठ गया। खुशी-खुशी वह रोटी खाने की सोच रहा था। तभी एक लोमड़ी वहाँ आ गई। वह भी भूखी थी। उसने कौए की रोटी देखी। उसके मन मे लालच उत्पन्न हुआ ।

(3) तदा सा लोमशा ———————— आगच्छ ।
अनुवाद – तब उस लोमड़ी ने एक उपाय सोचा। वह कौए से बोली – "हे कौए! तुम बहुत ही सुन्दर हो। तुम्हारा कालारंग अत्यंत आकर्षित करनेवाला है। तुम मधुरगीत गाते हो। मैं तुम्हारा मधुर गीत सुनना चाहती हूँ। इसलिए यहीं आओ"।

(4) स्वप्रशंसां श्रुत्वा ———————— निःशब्दः अभवत् ।
अनुवाद – अपनी प्रशंसा सुनकर कौआ अत्यन्त प्रसन्न हुआ। जब वह 'काँव-काँव ऽऽऽ यह गीत गा रहा था, तब उसके मुँह से रोटी जमीन पर गिर गई। चतुर लोमड़ी अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने खुशी होकर रोटी खाई। इसके बाद वह कौए से बोली – 'गाने के साथ भोजन कराने के लिए धन्यवाद।' मूर्ख कौआ निः शब्द हो गया। अर्थात वह कुछ भी न बोल पाया।

(5) पूर्ण वाक्य में उत्तर –

(क) वृक्षस्य शाखायां काकः उपाविशत् ।
(ख) लोमशा काकस्य प्रशंसाम् अकरोत् ।
(ग) काकस्य रोटिका भूमौ अपतत् ।
(घ) लोमशा रोटिकां अलभत ।
(ङ) काकः इतस्ततः भोजनार्थम् अभ्रमत् ।

****